# जनाब ज़ैनब (स0) की शख़सियत

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्येदुल उलमा सैय्यिद अली नक़ी ताबा सराह

आप हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) और जनाब फातिमा ज़हरा (स0) की बड़ी बेटी और पैग़म्बरे इस्लाम की बड़ी नवासी थीं। इस हैसियत से आप कर्बला के वाक़ेए में हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के बाद सबसे ज़्यादा मशहूर शख़सियत वाली थीं।

जब आपके बुजुर्ग दादा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) और बुजुर्ग माँ जनाब फातिमा ज़हरा (स0) की वफात हुई है तो आप बहुत छोटी थीं। इनके बाद आप अपने बाप हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) की तरबियत के साये में परवरिश पाई और हज़रत ने आपकी शादी अपने हक़ीक़ी भतीजे जनाब अब्दुल्लाह बिन जाफर के साथ की। जिनको उनकी फैय्याज़ी की बदौलत ''बह्रुल जूद'' (सख़ावत का समन्दर) के लक़ब से याद किया जाता था।

जनाब अमीर (अ0) मुहब्बत व शफक़त के लेहाज़ से जनाब ज़ैनब के साथ तक़रीबन इमाम हसन (अ0) व इमाम हुसैन (अ0) के बराबर सुलूक करते थे। चुनानचे उस रमज़ान के महीने में जिसकी उन्नीस तारीख़ को हज़रत अमीर (अ0) के मुबारक सर पर चोट लगी है हज़रत ने शुरु महीने से अपने अफतार के दिनों को अपनी औलाद पर बाँट दिया था वह इस तरह कि एक रात इमाम हसन के यहाँ अफतार फरमाते थे, एक रात इमाम हुसैन (अ0) के यहाँ और एक रात अब्दुल्लाह बिन जाफर के मकान पर यानी अपनी बेटी जनाब ज़ैनब (स0) के यहाँ।

(इरशाद शैख़ मुफीद, पे–8 तेहरान)

कर्बला के वाक़ेए तक कम से कम पचास साल के लम्बे ज़माने में ग़ैर मामूली वाक़ेआत सामने आये और उनमें आपने ग़ैर मामूली बर्दाश्त की ताक़त को कम से कम तीन ज़िन्दा मिसालों में दिखाया। यही वह बुनियाद थी जिस पर आपके ऊँचे किरदार की वह मज़बूत इमारत बनी जिसे सख़्त से सख़्त मुसीबतें ज़र्रा बराबर भी न हिला सकीं।

मदीने से लेकर कर्बला तक हज़रत ज़ैनब हर मंज़िल में इमाम हुसैन (अ0) के साथ थीं और इसलिए कर्बला की जंग की वजहें जहाँ से शुरु हुईं और जिन नतीजोंतक पहुँचीं इन सब को हज़रत ज़ैनबे कुबरा (स0) ही की ज़िन्दगी की कहानी समझना चाहिए।

इनमें से कुछ वाक़ेआत में आपका बयान इतिहास के पन्नों में खुला हुआ नज़र आता है। चुनानचे कर्बला के बाद एक मौक़ा वह है जब बहन ने भाई की ज़बान से वह उम्मीद भरे अश्आर सुने जिनका ख़ुलासा मतलब यह है कि ज़माने का अन्दाज़ सुबह व शाम यही है कि कोई न कोई

मौत का निवाला बनता है और हर जानदार को इसी रास्ते पर जाना है।

इन अश्आर से ज़ैनबे कुबरा (स0) ने महसूस किया कि भाई अपनी सुनानी सुना रहे हैं आप बेताब होकर भाई के पास आईं और कहा हाए काश में दुनिया से गुज़र चुकी होती आज मुझे महसूस हो रहा है कि मेरी माँ का साया सर से उठा, मेरे बाप और मेरे भाई हसन (अ0) आज ही मुझ से छुट रहे हैं। आप ही तो इन सबके जानशीन हैं। इमाम हुसैन (अ0) ने बहन को सब्र की नसीहत की। जनाब ज़ैनब (अ0) ने कहाः क्यों भाई! क्या बिलकुल आप मरने पर तैयार हो गये हैं। हज़रत ने एक अरबी की मिसाल ज़बान पर जारी फरमाई जिसका मतलब यह था कि इसके सिवा कोई चारा नहीं है। यह सुन कर जनाब ज़ैनब की बेचैनी और बढ़ी और कहाः हाए ग़ज़ब! इसका मतलब यह है कि आपको ज़बरदस्ती हमसे छीन लिया जायेगा। यह कहकर अपने मुँह पर तमांचे मारे, गरीबान फाड़ा और बेहोश होकर गिर पड़ीं। इमाम किसी तरह बहन को होश में लाये और समझाने वाले अलफाज़ में बहन को सब्र की हिदायत फ़रमाकर क़सम दी कि मेरे बाद गरीबान न फाड़ना, मुँह न नोचना, और वावेला कह कर नौहा न करना। फिर बहन को ले जाकर उस जगह बिठा दिया जहाँ ज़ैनुलआबिदीन बीमारी की हालत में लेटे हुए थे। (तबरी, जि–6 पे:239–240)

अगर ग़म में और वह भी भाई का ग़म, और भाई भी इमाम और ख़ुदा का चाहने वाला। उसके ग़म में यह बातें शरीअत के हिसाब से मना होतीं तो हज़रत के लिये शरीअत के इन अहकाम को याद दिलाना काफी होता, ख़ास कर वसिय्यत की ज़रूरत न होती। लेकिन चूँकि ऐसे ग़म में यह बातें जायज़ हैं और शान के मुताबिक़ हैं। मगर हज़रत ज़ैनब (स0) को जिन हालात का सामना करना था उनमें भाई की शहादत के बाद उन पर ज़िम्मादारियाँ बहुत ज़्यादा पड़ने वाली थीं फिर बुरा–भला कहने वालों का माहौल मिलने वाला था। इसलिए हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने यह ख़ास वसिय्यत बहन को फरमाई और यह हज़रत ज़ैनब के सब्र करने का बड़ा कारनामा है कि जो सिर्फ भाई की ज़बान से शहादत की ख़बर सुनकर बेताब हो गई हों। भाई की शहादत के बाद उन्होंने अपने को ऐसा संभाला कि कर्बला से लेकर कूफा और शाम और फिर वापसी मदीने तक पहाड़ भी उनके सुकून और बर्दाश्त के सामने छोटे नज़र आते हैं।

नवीं तारीख़ मुहर्रम को जब शिम्र इब्ने ज़ियाद का ख़त लेकर उमर बिन साद के पास आया कि हमने तुमको सुलह की बातचीत के लिये नहीं भेजा है अगर हुसैन और उनके साथी मेरे हुक्म के सामने सर झुका लें और अपने को मेरे रहम व करम पर छोड़ें तो उनको ख़ामोशी के साथ मेरे पास भेज दो और अगर वह इन्कार करें तो उन पर हमला कर दो। (अलअख़बारुत्तिवाल, पे–252) और इसके बाद उमरे साद ने एक दम हुसैनी फौज पर हमला कर दिया। उस वक़्त इमाम हुसैन अस्र की

नमाज़ के बाद ख़ेमे के दरवाज़े पर तलवार का सहारा लेकर घुटनों पर सर रखे बैठे थे और आपकी आँख लग गई थी कि एक बार घोड़ों की टाप और फौज के शोर की आवाज़ जनाबे ज़ैनब के कान में गई। आप घबराकर पर्दे के पास आईं और इमाम हुसैन (अ0) को ख़बरदार किया कि देखिये दुश्मनी की फौज की आवाज़ें बहुत क़रीब से आ रही हैं आपके बाद जनाब अबुलफज़लिल अब्बास आए और उन्होंने ख़बर दी कि दुश्मन की फौज ने चढ़ाई कर दी है।

आशूर के दिन जब इमाम जाने के लिये तशरीफ लाए तो आपने हज़रत ज़ैनब ही से वह कुर्ता लेकर पहना जिसे जगह–जगह से फाड़ा था ताकि दुश्मन लूटने के वक़्त पुराना होने की वजह से शायद इस कुर्ते को न लें और लाश आपकी बिना कपड़ों के न हो।

इसके बाद हज़रत ज़ैनब कुबरा (स0) की आँखों के सामने वह मन्ज़र पेश आए जिनका ख़याल ही ख़ेमों की लूट और फिर आगज़नी और इसके बाद क़ैद इन तमाम बातों को जनाब ज़ैनब ने बड़े सब्र के साथ तय किया।

11 मुहर्रम की सुबह को जब हुसैन के बचे हुए लोग क़ैदी बनाये जा चुके और लुटा हुआ क़ाफला कूफा की तरफ भेजा गया तो क़त्लगाह से होकर गुज़रा कि जहाँ यज़ीद की फौज के मक़तूलों के दफन किये जाने के बाद ख़ुदा के रास्ते के शहीदों की लाशें बे ग़ुस्ल व बे कफन मिट्टी और ख़ून में सनी छोड़ दी गई थीं।

इस दर्दनाक मन्ज़र से बीमार व कमज़ोर अली बिन हुसैन (ज़ैनुलआबिदीन अ0) का वह हाल हुआ जिसे देखकर जनाब ज़ैनब बेताब हो गईं और कहा ऐ जाने वालों की याद यह तुम्हारी क्या हालत है कि रूह तुम्हारे जिस्म से निकलना चाहती है भतीजे ने जवाब दिया ऐ फूफी इस मन्ज़र को देखकर किस तरह बर्दाश्त करूँ कि मेरे बुज़ुर्ग बाप और चचा और भाई ग़रज़ कि तमाम अज़ीज़ व रिश्तेदारों को देख रहा हूँ कि सब बे कफन–दफन पड़े हुए हैं और कोई उनका हाल पूछने वाला नहीं है। इस नाजुक मौक़े पर जनाब ज़ैनब ही का काम था कि आपने अपनी बुज़ुर्ग माँ हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) की हदीस बयान करके कि यह लाशें इस हाल में नहीं रह जाएँगी इनकी क़ब्रें बनेंगी और इन पर रौज़े बनाये जाएँगे और देखने वालों के मरकज़ होंगे। इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) को तसल्ली और दिलासा दिया।

इसके बाद कूफे के बाज़ार से जब आले रसूल का लुटा हुआ क़ाफला इस बेकसी के हाल में गुज़र रहा था जिसको देखकर पत्थर का दिल भी पिघल जाता और कूफा के बाज़ार में हर तरफ कोहराम मच गया तो बशीर बिन हज़ीम असदी नक़ल करते हैं कि इस वक़्त ज़ैनब बिन्ते अली ने भीड़ की तरफ चेहरा किया और तक़रीर शुरु की मैने कभी एक पर्दा करने वाली को आपकी तरह ज़ोरदार तक़रीर करते न सुना था बस मालूम होता था कि आपकी ज़बान से आपके बुज़ुर्ग बाप हज़रत अली बिन अबी तालिब (अ0) बोल रहे हैं। आपने लोगों की तरफ ख़ामोश रहने का इशारा

किया जिससे हर तरफ ख़ामोशी छा गई आपने फरमाया–

तारीफ के लायक़ अल्लाह है और सलात व सलाम मेरे बुजुर्ग मुहम्मद मुस्तफा (स0) और उनकी इज़्ज़त के साथ ख़ास है। ऐ इब्ने कूफ़ा! ऐ धोका और फरेब करने वालों! तुम रोते हो! ख़ुदा करे तुम्हारे आँसुओं को थमना नसीब न हो। और तुम्हारी नौहे और फरियाद की आवाज़ों में सुकून पैदा न होने पाये। फिर आपकी तक़रीर का सिलसिला जारी रहा यहाँ तक कि आपने फरमाया क्या तुम लोग सचमुच आँसू बहा रहे और चीखें मार–मार कर रो रहे हो? हक़ीक़त में तुम्हारे लिये यही बेहतर है कि ज़्यादा रोओ और कम हंसो। तुमने समझने की कोशिश भी की कि किस तरह तुमने ख़ुदा के रसूल के जिगर को चाक किया उनके पाक घर वालों को बेपर्दा किया और उनकी बेइज़्ज़ती की। क्या तुमको इस पर ताज्जुब है कि आसमान ने ख़ून बरसाया तो कुछ नहीं, आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त होगा और उस वक़्त तुम्हारा कोई मदद करने वाला न होगा। इस कुछ रोज़ की ढील से ख़ुश न होना। ख़ुदा को जल्दी करने ज़रूरत ही नहीं इसलिए कि उसको मौक़ा हाथ से जाने का डर नहीं बेशक वह तुम्हें एक वक़्त तक तुम्हारे हाल पर छोड़े रहेगा। रिवायत करने वाला लिखता है कि आपकी दिल हिला देने वाली तक़रीर के दौरान में मेरे आसपास तमाम सुनने वालों ने बेचैनी की हालत में दाँतों में उंगलियाँ दबाए रो रहे थे और एक बुढढे को मैंने देखा वह कह रहा था कि ''मेरे माँ–बाप तुम पर क़ुर्बान! तुम्हारे बूढ़े तमाम दुनिया के बूढ़ों से, तुम्हारे जवाब तमाम जवानों से तुम्हारी औरतें तमाम औरतों से और तुम्हारी नसल तमाम नसलों से अफज़ल व बेहतर है न वह कभी ज़लील की जा सकती है न बेइज़्ज़त।

इसके बाद इब्ने ज़ियाद के दरबार का पड़ाव आया। आपके चारो तरफ कनीज़ें घेरा बाँधे हुए बैठी थीं। इब्ने ज़ियाद ने पूछा यह कौन औरत है, तीन बार उसने पूछा कि आख़िर एक कनीज़ ने यह कह दिया। अरे यह ज़ैनब बिन्ते फातिमा हैं यह सुनकर इब्ने ज़ियाद ने जो कामियाबी और जीत के नशे में चूर था आपको बताते हुए कहाः

ख़ुदा का शुक्र है कि उसने तुम लोगों को बेइज़्ज़त किया, तुम्हें क़त्ल किया और तुम्हारे झूठ को सामने ला दिया। (तबरी, जि–6 पे–262)

''तुम लोगों'' के ख़िताब के साथ इस जुमले में है कि ''तुम्हारे झूठ को सामने ला दिया'' बड़ी गहराई थी। इसमें रिसालत व वही और क़ुआन व हदीस सबका इनकार छुपा था। यह इस्लामी उसूल पर हमला था जिस पर हज़रत ज़ैनब ने ख़ामोश रहना अपनी लिये ठीक न जाना। फरमायाः

तारीफ है उस ख़ुदा के लिये जिसने हमको इज़्ज़त दी मुहम्मद मुस्तफा (स0) के साथ और हमें पाक व पाकीज़ा बनाया। उस तरह जो हक़ है पाकीज़ा बनाने का न वह कि जो तू कहता है बेइज़्ज़त होता है जो फासिक़ व फाजिर है और झूठ इसका यक़ीनन है जिसके सामने हमेशा

सच्चाई न रहे और वह हम नहीं हमारा ग़ैर है।

अगर ग़ैरत होती तो इब्ने ज़ियाद को चुप हो जाना चाहिए था मगर वहाँ तो हुकूमत का नशा था और सलतनत का घमण्ड था। कहने लगाः ''देखा तुमने! अल्लाह ने तुम्हारे भाई और दूसरे रिश्तेदारों के साथ क्या किया?''

जनाब ज़ैनब ने बड़े सुकून और इत्मिनान के साथ जवाब दियाः

''मैंने अच्छा ही देखा। वह ख़ुदा के ख़ास बन्दे थे जिनके लिये शहादत का दर्जा तक़दीर लिखने वाले ने लिख दिया था। और वह अपने पैरों पर चलकर कुर्बान होने की जगह तक गये और वह दिन भी दूर नहीं जब ख़ुदा के सामने तेरा और उनका मुक़ाबला होगा और तुझको अपनी करतूतों पर जवाब देना होगा।''

फिर आख़री मारके में यज़ीद का दरबार था। जब भरे हुए दरबार में यज़ीद ने वह कुफ़्रिया अश्आर पढ़े–

यानी काश मेरे जंग बद्र वाले बुज़ुर्ग ज़िन्दा होते और देखते कि मुहम्मद के दीन की मदद करने वाले किस तरह नेज़ों के पड़ने से घबरा गये हैं। तो वह इस हाल में ख़ुश होकर दुआएँ देने लगते। बनी हाशिम ने हुकूमत हासिल करने का एक खेल खेला था, हक़ीक़त में न कोई ख़बर आई थी और न कोई वही नाज़िल हुई थी।

यह सुनना था कि हज़रत ज़ैनब खड़ी हो गईं और आपने वह तक़रीर की जिसने यज़ीद की इज़्ज़त व सरदारी की तमाम बुनियादों को खोखला कर दिया।

आपने फरमाया कि कितना सच्चा है मेरे ख़ुदा का फरमान कि आख़िर में उन लोगों की जो बुरे काम करते हैं यह हालत हुई कि वह ख़ुदा की आयतों को छुठलाने और उनकी हंसी उड़ाने लगे। तूने ऐ यज़ीद यह सोंचा है कि तूने हमको इस हाल तक पहुँचा दिया है और क़ैद करके अपने सामने बुलाया है तो इससे हमारी हक़ीक़त में बेइज़्ज़ती हो गई! ........... क्या तू भूल गया, ख़ुदा के इस फरमान को कि वह लोग यह न ख़याल करें जिन्होंने कुफ़्र को चुन रखा है, कि हम उनको ढील देते हैं वह उनके लिये किसी अच्छाई की वजह होगी। हम उनको सिर्फ इसलिए ढील देते हैं कि वह ख़ूब दिल खोलकर गुनाह कर लें आख़िरकार तो उनके लिये बहुत बुरी सज़ा ही है (तक़रीर करते हुए आपने फरमाया) अब तू अपने शिर्क करने वाले बुज़ुर्गों से तारीफ करवाना चाहत है, घबरा नहीं थोड़े दिनों में तू भी उनके पास पहुँचेगा............!

आख़री अलफाज़ यह थे कि शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने हमारे बुज़ुर्गों को शहादत के अन्जाम और रहमत के साथ मिलाया और वही हमारे लिये काफी और बेहतरीन मदद करने वाला है।

फिर बहुत दिनों के बाद जब क़ैद से रिहाई हुई तो ज़ालिम की राजधानी में मज़लूम का मातम करना भी आप ही का कारनामा था। मदीने में वापसी के बाद आप एक साल से ज़्यादा ज़िन्दा न रहीं और फिर वफात पा गईं।

□□□